कार्यक्रम इतना प्रभावशाली रहा कि इससे शासन बौखला उठा। (2)

(iv) रचनात्मक कार्य (Constructive Work) :- गाँधीजी द्वारा संचालित राष्ट्रीय आंदोलन का उद्देश्य केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की प्राप्ति नहीं बल्कि भारतीय जनता की गिरी हुई सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक स्थिति सुधारना था। इसके लिए गाँधीजी ने नारियों के उत्थान, गृह उद्योग का प्रचार, चरखा और मद्य निषेध आदि रचनात्मक कार्यों को अपनाया। गाँधीजी ने इन रचनात्मक कार्यक्रमों के आधार पर 'सर्वोदय समाज' की स्थापना चाही।

(v) साम्प्रदायिकता और अस्पृश्यता के ज़हर को समाप्त करने का प्रयत्न (To end the poison of Communalism and Untouchability) :- गाँधीजी केवल एक सक्षम राजनीतिज्ञ ही नहीं, बल्कि एक कुशल एवं व्यावहारिक समाज सुधारक भी थे। गाँधीजी ने राष्ट्रीय आंदोलन की दो बाधाओं- साम्प्रदायिकता और अस्पृश्यता को खत्म करने का अनवरत प्रयत्न किया। वे साम्प्रदायिकता को हिन्दू समाज का विष और अस्पृश्यता को इस समाज का कलंक मानते थे। अतः इन दोनों को खत्म करने के लिए उन्होंने आजीवन प्रयत्न किया और खासकर साम्प्रदायिकता के विष को खत्म करने के प्रयत्नों में ही 30 जनवरी, 1948 को अपने प्राणों की आहुति दे दी।

(vi) राजनीति का आध्यात्मीकरण (Spiritualization of Politics) राजनीति का आध्यात्मीकरण गाँधीजी की राजनीति का सबसे अधिक महत्वपूर्ण देन है। गाँधीजी धर्म से पृथक राजनीति को मृत्युजाल मानते थे और धर्म तथा राजनीति में कोई अंतर नहीं मानते थे। गाँधीजी ने धर्म और ईश्वर में विश्वास तथा राजनीति में सत्य और अहिंसा का प्रयोग करके राजनीति को एक नया आयाम दिया।

(vii) राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व (Leadership of National Movement) :- गाँधीजी ने 1920 से 1947 तक भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन का पथ प्रदर्शन और सफल नेतृत्व किया। गाँधीजी के नेतृत्व से राष्ट्रीय आंदोलन में नई जान आ गई। गाँधीजी ने स्वतंत्रता के लिए भारतीयों को प्रेरित किया जिससे भारतीय स्वतंत्रता पाने के लिए उत्तेजित हुए और कारावास आंदोलनकारियों के तीर्थ स्थल बन गए। उन्होंने हमेशा राष्ट्रीय आंदोलन का दिशा-निर्देश किया।

राष्ट्र निर्माता, युगद्रष्टा, युगस्रष्टा के रूप में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का भारतीय इतिहास में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन मे महात्मा गाँधी का योगदान ①
(Contribution of Gandhiji to National Movement)

1919 से लेकर 1947 तक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का काल खंड 'गाँधी युग' के नाम से जाना जाता है। इस अवधि में गाँधीजी ने राष्ट्रीय आन्दोलन को एक नया आयाम दिया तथा सत्य और अहिंसा के नये अस्त्र शस्त्रों से लैस होकर इनका सफल संचालन किया। गाँधीजी ने अपने सफल नेतृत्व से राष्ट्रीय आन्दोलन को एक क्रांतिकारी जन आंदोलन का रूप प्रदान किया और इसे क्रियाशील बनाया और अंततः भारत विदेशी शासन से मुक्ति प्राप्त कर सका। इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में गाँधीजी का योगदान निम्नलिखित है —

(i) राष्ट्रीय आन्दोलन को जन आंदोलन में परिवर्तित करना (To transfer National Movement into people's Movement) :– भारतीय राजनीति में गाँधीजी के प्रवेश से पूर्व राष्ट्रीय आंदोलन मध्यम वर्गीय बुद्धिजीवियों तक ही सीमित था। परन्तु गाँधीजी ने इस आंदोलन को व्यापक बनाकर इसे जन आन्दोलन में परिवर्तित कर दिया। कूपलैंड के अनुसार गाँधीजी ने राष्ट्रीय आंदोलन को लोकप्रिय क्रांतिकारी आन्दोलन मे परिवर्तित कर दिया। पहले यह आन्दोलन शहरों के बुद्धिजीवी वर्ग तक ही सीमित था परन्तु अब गाँवों तक पहुँच गया।

(ii) राष्ट्रीय आन्दोलन को नया रूप (New Concept of the National Movement) :– गाँधीजी के सक्रिय रूप से भारतीय राजनीति में प्रवेश करने से पूर्व राष्ट्रीय आन्दोलन में दो तरह की विचारधाराएँ प्रचलित थी — उदारवादी और उग्रवादी। उदारवादी विचारधारा से प्रभावित आंदोलनकारी शांतिपूर्ण तथा संवैधानिक साधनों में विश्वास करते थे तथा उग्रवादी (आतंकवादी) विचारधारा से प्रभावित आंदोलनकारी हिंसा से भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की समाप्ति के लिए प्रयत्नशील थे। गाँधीजी ने इन दोनों विचारधाराओं की अपूर्णता को समझा एवं आदर्शों और परिस्थितियों को देखते हुए अहिंसात्मक आंदोलन के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। गाँधीजी विश्व के प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने अहिंसात्मक आंदोलन का मार्ग अपनाकर राष्ट्रीय स्वतंत्रता का लक्ष्य प्राप्त करने में सफलता पाई।

(iii) नया कार्यक्रम (New Programmes) :– गाँधीजी ने राष्ट्रीय आंदोलन को एक नया कार्यक्रम दिया। जिन्होंने 1920 ई० में असहयोग आन्दोलन तथा में 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' द्वारा इस बात को प्रतिपादित किया कि अगर भारतीय जनता ब्रिटिश संस्थाओं, नौकरियों, अदालतों, समारोहों और उत्सवों आदि का बहिष्कार कर दें तो ब्रिटिश शासन ठप्प पड सकता है। गाँधीजी का यह नया

कार्यक्रम इतना प्रभावकारी रहा कि इससे शासन खोखला हुआ। (2)

(iv) रचनात्मक कार्य (Constructive Work) :- डॉ. A.O. ह्यूम ... शिक्षा विज्ञ

गमन, जाति विभेद की नीति तथा पुरातन सामाजिक व्यवस्था की समाप्ति ने राष्ट्रीय जागरण को प्रस्फुटित होने में सहायता प्रदान की। (3)

(iv) **आर्थिक कारण** :- आर्थिक असंतोष क्रांति का प्रमुख कारण बना। अंग्रेजों के भारत आने से पहले भारतीयों की आर्थिक दशा बहुत अच्छी नहीं थी लेकिन संतोषजनक तो अवश्य ही थी। भारत में हस्तकरघा तथा गृह उद्योग काफी विकसित थे। अन्न काफी पैदा होता था। परन्तु पहले एक व्यापारी और बाद में एक शासक के रूप में अंग्रेजों ने भारत के उद्योग-धन्धों को चौपट कर दिया। भारत से धन लूटकर इंग्लैण्ड ले जाया जाने लगा जिससे भारतीय जनता निरंतर निर्धन होती चली गयी। बाहर से माल आने लगे लेकिन भारत के माल बाहर जाने पर रोक दिये गये, लगान बढ़ा दिया गया। भारतीयों ने इस दशा को अंग्रेजों की देन कही। जिससे भारतीय अंग्रेजी शासन से मुक्ति के लिए छटपटाने लगे और राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे।

(v) **सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक कारण** :- सांस्कृतिक चेतना तथा शैक्षणिक सुविधाओं ने भारतीयों के हृदय में राष्ट्रीय जागरण की भावना को जगाने में महत्वपूर्ण कार्य किया। अंग्रेजी के माध्यम द्वारा शिक्षा का प्रचलन, मैकाले की शिक्षा नीति, पाश्चात्य देशों की उदार नीति इत्यादि के सम्पर्क में आने का अवसर तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति का ज्ञान राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए ईश्वरीय वरदान सिद्ध हुआ।

उपरोक्त कारणों के अलावे सरकारी नौकरियों में अन्यायपूर्ण तथा पक्षपात नीति, विदेशी आंदोलनों का प्रभाव, आवागमन तथा संवादवाहन के साधनों का विकास, भारतीयों के हृदय में आत्मग्लानि तथा क्षोभ इत्यादि कारणों ने भारतीय राष्ट्रीय जागरण को विकास की ओर फलीभूत किया।

निष्कर्ष :- भारतीयों को जगाने का काम धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलनों ने ही किया। भारतीयों में देशभक्ति और स्वाभिमान का बीज इन्हीं आन्दोलनों ने बोया तथा राजनीतिक एवं अन्य कारणों ने उस बीज को अंकुरित तथा प्रस्फुटित होने में भरपूर सहयोग किया। 19वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों से लेकर 1885 ई० की अवधि में भारतीयों के हृदय में राजनीतिक चेतना और राष्ट्रीय जागरण का उद्भव हुआ। भारतीय सारी यातनाओं को बर्दाश्त करता रहा लेकिन जब पेट की ज्वाला धधकने लगी तो 'मरता क्या नहीं करता' भारतीयों में क्रांति की ज्वाला फूटने लगी और अंग्रेजों की कुटिल नीति से छुटकारा पाने को क्रियाशील रहा। अंग्रेजों को यहाँ से भगाकर ही दम लिया।

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान
डी.के. कॉलेज, डुमरॉव